© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
https://www.eurekajournals.com/shodh.html
ISSN: 2581-3501

डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल के उपान्यासों में कथ्य संप्रेषण

डॉ. अनिल कुमार शर्मा[1]

[1]विभागाध्यक्ष हिन्दी, सेठ जी.बी. पोदार कॉलेज, नवलगढ़ जिला-झुन्झुनू (राज.)

आज डॉ. लाल नहीं है। उनका अभाव हमेशा साहित्य जगत को खलता रहेगा। किन्तु साहित्कार मर कर भी मरता नहीं, अपनी रचनाओं के माध्यम से सदैव जीता रहता है। डॉ. लाल बहुमुखी प्रतिभा के धनी तथा महान् रचनाकार थे। उन्होंने अपना जीवन साहित्य-साधना को समर्पित कर दिया पर उन्हें अपने जीवन में वह ख्याति नहीं मिली जो उन्हें वस्तुतः मिलनी चाहिए थी। इसीलिए उनके उपन्यास साहित्य देवीना, श्रृंगार, हरा समन्दर गोपीचन्दर, प्रेम अपवित्र नदी, बसंत की प्रतीक्षा, अपना-अपना राक्षस, बडे भैया, रूपाजीवा, गली अनारकली आदि का देय हिन्दी जगत को चुकाना अभी बाकी है।

डॉ. लाल के उपन्यासों के वस्तु विन्यास का विवेचन है-उनका 'देवीना' उपन्यास शकुन्तला दुष्यन्त के पौराणिक आख्यान को वर्तमान सामाजिक संदर्भों में व्यक्त करता है। दुष्यन्त की विस्मृति एवं बाद में उसका अभियान प्रस्तुत उपन्यास की पृष्ठभूमि में है। अंगूठी भी उपन्यास में है। यद्यपि अंगूठी द्वारा अभियान सम्पन्न नहीं हुआ है जो उचित प्रतीत होता है। नवयौवन प्राप्त पुरूष एवं नारी वस्तुतः आत्मरति के शिकार होते हुए स्वयं को प्रेम के शिकार समझ लेते हैं। वे प्रेम करना प्रारम्भ कर देते हैं देखने की क्रियाएँ भविष्य के लिए छोड़ देते है। बिना देखे अर्थात् बिना परिचय प्राप्त किये प्रेम निरर्थक है।

स्वच्छन्द विहार प्राणी मात्र की जन्मजात प्रबल प्रवृत्ति है। जब उन्मुक्त गगन में विचरण करने वाला विहग कनक कफस में किलकारी युवत किल्लोल नहीं कर पता तब फिर भला सुर-दुर्लभ शरीर धारी मानव ही कैसे बन्धन में बंध सकता है। इसी प्रवृत्ति को चरितार्थ करने के लिए ही 'श्रृंगार' उपन्यास की रचना की है। श्रीमन्त और पेरिन अचानक महाबलीपुरम के रेतीले समुन्द्र तट पर मिलते हैं। दोनों स्वच्छन्द विहार के पक्षपाती हैं इसीलिए वे अपने-अपने वैवाहिक जीवन की जटिल जंजीरों को तोड़कर अनजानी डगर पर चल पड़ते हैं। भविष्य

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

क्या होगा इसकी उन्हें तनिक भी परवाह नहीं हैं अपने उन्मुक्त मिलन को किसी रिश्ते में बांधना उन्हें स्वीकार नहीं है।

'हरा समन्दर गोपीचन्दर' उपन्यास में राजनीति, इतिहास और कथा दृष्टियों का तानाबाना बुनकर ऐसी अंनूठी कथा की सृष्टि की गई है, जिसके माध्यम से भारतीय जीवन और उसका राजनीतिक चरित्र मूर्तिमान हो उठा है। इस कथा में प्राचीन विक्रम और वैताल की कथा को कथानायक विक्रम से और वैताल पांडे चरित्र के साथ जोड़ा गया है। कहानी में कई अलौकिक घटनाओं का वर्णन है। जैसे विक्रम और मधुबाला का स्वप्न से मिलन और अंगूठी का आदान-प्रदान। आज राजनीति जिस प्रकार सर्वग्रही हो उठी उससे मनुष्य के मन में यह भ्रांति पैदा हो गई कि राजनीति ही सब चीजों की बुनियाद है।

'बसन्त की प्रतीक्षा' उपन्यास में स्त्रीपीड़ा एक नितान्त भिन्न रूप में प्रस्तुत की गई है। एक छात्रा जो प्रेम-निवेदन को ठुकराती है, अन्ततः पाती है कि वस्तुतः वरेण्य वही है जिसे वह तिरस्कृत करती रही है। एक धनी व्यापारी से विवाह हो जाने के पश्चात उसे अपने प्राध्यापक अनुपम मिश्र का सच्चा प्रणय निवदेन बार-बार स्मरण आता हैं उसकी पीड़ा उपेक्षा जनित अतृप्ति और असन्तोष के स्तर पर है। अन्त में मिलन सच्चे प्रेम की सफलता को रेखाकिंत करता है।

'रूपाजीवी' उपन्यास समाज की अर्थव्यवस्था को पैनेपन से देखता है, उसके ताने बाने को समझाने की कोशिश करता है। व्यापारिक दृष्बिट और व्यावसायिक मनोवृत्ति जीवन को जड़ और सम्बन्धों को कुंडित कर देती है। इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत उपन्यास है जहाँ गोरेमल द्वारा निर्दिष्ट चैतराम व्यापार की प्रगति को जीवन का आधार माना लेता है। गोरे मल आर्थिक निवेश द्वारा चेतराम को नियंत्रित करता है जिसके परिणामस्वरूप चैतराम का परिवार टूटता जाता है। एक अमानवीय जड़ता परिवार के माहोल को क्रमशः मनहूस बनाती चलती है। स्नेह के आदान-प्रदान के अभाव में पति-पत्नी का दाम्पत्य जीवन सूखने लगता है। रूपाबहू की कठोरता के मूल में भाव जगत की यही निःशब्द हाहाकार है।

'कालेफूल का पौधा' उपन्यास भारतीय दाम्पत्य जीवन की गाथा है। पति है-देवन एक उच्चमध्यवर्गीय, उच्च शिक्षित, पश्चिमी सभ्यता का प्रशंसक और उसी संस्कृति की ओर उन्मुख प्यासे पक्षी के समान जीवन के दूरस्थ स्थनों तक उड़ान भरने को आतुर और पत्नी है गीता-भारतीय संस्कृति की उपासक धार्मिक भावनाओं की प्रवर्तक नवनीत-सी कोमल। उपन्यास में नाना प्रकार के द्वन्द्व और चिन्तन हैं विवाह उपरान्त भी देवन का झुकाव पर

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

स्त्री की ओर है। किन्तु गीता देवन को अपनी शालीनता और संस्कृति से प्रभावित कर परिवार की और उन्मुख करती है।

मन-वृन्दावन में अनुभव को रचना के स्तर पर सृजित करने के लिए ऐतिहासिक पौराणिक स्थल 'वृन्दावन और शाश्वत् चेतना प्रवाह के रूप में मन' का प्रयोग एक मिथकीय प्रयोग न होकर मिथ का निर्माण है। प्रस्तुत मिथ की रूपरेह रूपात्मकता समय की निरन्तरता और तात्कालिकता के द्वन्द्व से न उभर-कर दोनों की सामांतरता में उभरी है। मन वृन्दावन का कथात्मक आयाम सीमित है क्योंकि यह उपन्यास प्रेमकथा के रूप में लिखा गया है, अतः संपूर्ण औपन्यासिक तनाव, द्वन्द्व, अंतर्मुखी है। इन अंतर्मुख द्वन्द्व के कारण स्वरूप कोई भी बाहरी घटना विशेष रूप से नहीं होता।

'प्रेम अपवित्र नदी' उपन्यास का कथापलक अत्यन्त विस्तीर्ण है। तीन पीढ़ियों के जीवन-क्रम में कितने ही सामाजिक मूल्य और सांस्कृतिक मापदण्ड परिवर्तित हो जाते है। भ्रांत आस्थाओं और जर्जर परंपराओं के अवरोध को प्रेम की उच्छल सरिता सदा से अपने अबाध प्रवाह से बहाती चली जा रही है, किन्तु न अवरोध समाप्त होते हैं और न सरिता की गति रूकती है। इस सबसे बीच यह प्रश्न एक अभैद्य चट्टान की तरह सदियों से अपने स्थान पर अविचल भाव से खड़ा हुआ है- प्रेम में क्या पवित्र है और क्या अपवित्र?

'अपना-अपना राक्षस' कुमार अवस्था के नवयुवकों की यथार्थ मानसिक स्थितियों के उपर आधारित कुमार पाठकों के चित्ताकर्षक और व्यस्क पाठकों के लिए एक चुनौती है।

'बडे के भैया' एक सशक्त व उपन्यास है जिसमें ग्रामीण जीवन के सामाजिक यथार्य का चित्रण और व्यक्ति के जीवन के सामाजिक यथार्य का चित्रण औा व्यक्ति के जीवन के असंगत विरोधाभासों का बडे के भैया के रूप में सटीक चित्रण है।

'बया का घोंसला और सांप' एक समस्या मूलक व्यक्तिवादी उपन्यास है।

इसमें समाज में व्याप्त समसयाओं को व्यक्तिवादी धरातल पर व्यक्त किया गया है। इसमें बया के घोंसला सुभागी जैसी निरीह निर्बल भारतीय समाज की अबलाएँ हैं तथा साँप रामनगर के तहसीलदार कामताप्रसाद जैसे क्रूर भक्षक लोग हैं।

'बड़ी चम्पा छोटी चम्पा' उपन्यास में शासन यह व्यवस्था देता है कि अब वेश्याएँ नारियों के रूप में जियेंगी। उन्हें नये स्थान पर बसाने का अभियान शुरू होता है। कुछ स्वेच्छा से, कुछ विवशता से नये मार्ग पर बढ़ती है। बड़ी चम्पा और छोटी चम्पा दोनों ने ही सामाजिक जीवन

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

में सच्चा प्यार खोजने का प्रयत्न किया, लेकिन वे असफल रही। उन्हें मिला या तो अज्ञान या फिर रूप लिप्सा या स्वार्थ सामाजिक संस्कार।

गली अनारकली उपन्यास एक अछूते विषय को उसकी समग्रता में प्रस्तुत करता है। लखनऊ की चिकनकारी मशहूर है परन्तु लोग यह नहीं जानते कि इस खूबसूरत काम को करने वाली मुसलमान औरतें कैसे गरीबी और बेबवी के दिन गुजारती हैं। इस उपन्यास में लेखन में इन औरतों की जिन्दगी का माहौल प्रस्तुत करने के साथ-साथ गरीब मुस्लिम तबके की मूलभूत आर्थिक, सामाजिक समस्याओं को भी बारीकी से सामने रखा है। उनकी विवशताएँ कैसे उन्हें परिवार से तोड़कर वेश्यावृत्ति करने को बाध्य करती है यह सब चित्रण बड़ी बेबाकी और मार्मिकता से प्रस्तुत हुआ है।

पात्र योजना एवं चरित्र-चित्रण पर आधारित है जिसमें डॉ. लाल के उपन्यासों के पात्रों का चित्रण है-

देवकुमार

देवीना उपन्यास का नायक देवकुमार अपनी उम्र के पच्चीस साल बाद अपनी जीवन यात्रा पर यह सोचकर निकल पड़ता है कि इतनी कम उम्र में अनुभव क्या होता है? अनुभव तो कर्म से होता है। योग से उसको पूर्णता मिलती है। देवकुमार के चरित्र में बहुत उतास्चढ़ाव आते है। वह मानवीय दुर्बलताओं से सर्वथा परे नहीं है। उसमें भी प्रारम्भ में नवयुवकों जैसा रोमांटिक पास्ट है पलायन है और अन्त में सत्यानुभूति है।

देवीना

उपन्यास की नायिका है जो एक अवैध संतान है जिसे मंगलबाबा ने अच्छे संस्कारों से पाला है। देवीना के चरित्र का आरम्भ से अन्त तक सहज और सार्थक विकास हुआ है। वह धीर गंभीर उदात्त नारी है जिसमें लोक कल्याण, मानव हित की भावनाएँ निहित है।

मंगलबाबा

मंगलबाबा देवीना उपन्यास के महत्वपूर्ण पात्र है जिसमें उपन्यास के नायक-नायिका भी प्रभावित होते है। मंगलबाबा जीवनदर्शन के दार्शनिक प्रेम के तत्वज्ञानी और यथार्थ की दुनियां के सच्चे पुरूषार्थी महामानव हैं। जिनके कथन, कार्यव्यवहार उपन्यास के कथ्य है।

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

श्रीमन्त

शृंगार उपन्यास का नायक है जो प्रेम को जीवन की संजीवनी बूटी स्वीकारता है। प्रेम प्राणी की पशुत्व शक्ति को परिशुद्व कर पावनोन्मुखी कर कर देती है। लेकिन इसके अभाव में मनुष्य अपने अहं की तृष्टि करने के लिए क्या कुछ नहीं करता। इन्हीं विचारों के पुष्ट करता हुआ सम्पूर्ण उपन्यास में छाया हुआ है।

अनुपम मिश्र

बसंत की प्रतीक्षा उपन्यास के नायक हैं जिनके शान्त, सौम्य स्वभाव से प्रभावित होकर सभी उन्हें 'सर' कहकर सम्बोधित करते है। अनुपम मिश्र छात्रा से प्रेम निवेदन करते हैं जिसे वह ठुकराती है किन्तु अन्ततः पाती है।

मीनाक्षी टण्डन

बसंत की प्रतीक्षा उपन्यास की नायिका है। प्राध्यापक अनुपम मिश्र की छाया है जो उनका प्रेम निवेदन ठुकराती है अन्ततः पाती है कि वस्तुतः वरेण्य वही है जिसे वह तिरस्कृत करती है।

देवन

'काले फूल का पौधा' उपन्यास का नायक है जो एक उच्च मध्यवर्गीय, उच्च शिक्षित, पश्चिमी सभ्यता का प्रशंसक और उसी सभ्यता की और उन्मुख प्यासे पक्षी के समान जीवन के दूरस्थ स्थलों तक उड़ान भरने को आतुर है।

अरविन्द

मूलतः उन किशोर पात्रों में से है जो खुली आंखों से जीवन की समस्याओं, कल्पनाओं और यथार्थता को महसूस करता हैं और उनका समाधान खोज कर हल करने का प्रयास करते है। ओढ़ी हुई बेनागी जिन्दगी को बनी बनाई लीक पर न जीकर नये मानव मूल्यों और सत्यों को स्थापित कर जीवन को नये रूप में स्थापित कर स्वाभाविक ढंग से जीवन जीना चाहते है।

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

श्याम भाटिया

अपना-अपना राक्षस उपन्यास का सहनायक और कथ्य संदेवना को व्यक्त करने वाला एक महत्वपूर्ण पात्र है।

राजेन्द्र प्रसाद

अपना-अपना राक्षस उपन्यास में अरविन्द के पिता हैं जो अपने जीवन में विसंगति को जीते हैं जिसके कारण वे अभाव के राक्षस से लड़कर अपना समय शक्ति नष्ट करते हैं और दूसरे को पाने के संघर्ष में अपने आप को तबाह कर देते है। इस तरह उपन्यास में 'राजूदा' अर्थात् राजेन्द्र प्रसाद ऐसे पात्र हैं जो राक्षस और देवता में सामंजस्य न बिठा पाने के कारण दिग्भ्रांत रहते है।

प्रेम भाटिया

'अपना-अपना' उपन्यास में अपने ही मन के राक्षस से लड़ता हुआ राक्षस के आगोश में समा जाता है और अपने जीवन का घृणित विवादग्रस्त अन्त पाता है।

बड़के भैया

समाज के उन प्रतीक पात्रों में से है जो जीवन में विपल होकर पश्चाताप करते हैं और अपने जीवन की सारहीनता को दुर्भाग्य मान बैठते हैं जो यथार्थ से पलायन कर काल्पनिक और परमपरित धारणाओं को ही जीवन का आधार मानते हैं।

बड़ी चम्पा

उपन्यास की महत्पूर्ण पात्र है जिसके माध्यम से डॉ. लाल ने समाज की जीती जागती तस्वीर खींची है। नारी कितना ही सतीत्व का पल्ला पकडे पर समाज की नजरों में वह मात्र पतुरिया ही रहती है। बड़ी चम्पा को गंगाबेली बनकर भी पुनः बड़ी चम्पा ही होना पड़ता है।

छोटी चम्पा

मात्र नर्तकी ही नहीं है। वरन् तर्कशक्ति से सम्पन्न स्वच्छन्द जीवन यापन करने की अभिलाषिणी नारी है। वह पुरूष का सानिध्य पाना चाहती है लेकिन उसकी गुलामी में रहकर

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

जीना उसे लेशमात्र भी स्वीकार नहीं है। वह सामाजिक जीवन विसंगतियों में अपना जीवन न घुलाकर वैश्या ही बनी रहना चाहती है।

कमाल

गली अनारकली उपन्यास का नायक है जो लेखक के कथ्यों का वाहक और विचारों का प्रतिरूप है। वह सम्पूर्ण उपन्यास में अपने व्यक्तित्व और कृत्यों से सभी पात्रों को प्रभावित करता है। कमाल एक सार्थक पात्र है जो उपन्यास की मूल संवेदना को उभारने में समर्थ है।

अपाला

गली अनारकली उपन्यास में लाइलाज बीमार लड़की के रूप में उपन्यास के प्रारम्भ में आती है जो कमाल की संगति में आकर नारी चरित्र की गरिमा को व्यक्त करती है। अपाला का चरित्र नारी जागृति और उसके उज्ज्वल पहलुओं की और संकेत कर नारी प्रगतिशीलता का परिचय देता है।

तहमीना

गरीब मुसलामान औरतों को आत्मनिर्भर बनाने का सार्थक प्रयास करती है। गली अनारकली उपन्यास में उन कृत्यों द्वारा तहमीना का चरित्र एक संघर्षशीला नारी का उभरता है।

आमीर रजा

'गली अनारकली' उपन्यास का ऐसा पात्र है जो पुलिस द्वारा स्मगलिंग के केस में गिरफ्तार हो हेकर अपने दृश्चरित्र को प्रकट करता है। उपन्यास में उसके कृत्य असामाजिक है वह बिजनेस की आड़ में लखनऊ की गलियों में छुपकर सामाजिक भ्रष्टता पनपाता है।

कायनात

गली अनारकली उपन्यास में उन स्थियों में से हैं जो विवश हैं और समाज के आमीर रजा जैसे लोगों से पीड़ित है। उसके लिए जिन्दगी के माने केवल दिखावा है।

भाषा शैली एवं तद्दी विषयक शिल्प के अन्तर्गत डॉ. लाल के उपन्यासों की भाषा शैली का विवेचन है।

भाषा शैली की बहुमुखी तलाश लाल से भी उपन्यास में मिलती है। लाल ने भाषा-

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

शैली के साहित्यक या पुस्तकों की सड़ी-गली भाषा से उबारने में उन्होंने एक लम्बी यात्रा तय की है। इस यात्रा में उन्होंने लोकतत्वयुक्त भाषा और समसामयिक अभिव्यक्ति की भाषा में विशेष सिद्धि प्राप्त की है। लोकतत्व को इतनी सजीवता से प्रस्तुत करने वाले वे हिन्दी के अकेले उपन्यासकार हैं। इसी तरह हिन्दी के उपन्यासकारों में लाल के उपन्यासों में समसामयिक मूल्यों और विषमतापूर्ण स्थितियों का जितना संकट गहराता दिखाई देता है, उतना किसी और में नहीं। आधुनिक मानवीय जीवन के संकट ने जीवन के एक-एक तंतु और पारस्परिक सम्बन्धों के एक-एक अंग को जिस तरह क्षतविक्षत कर डाला है, उसको लाल के उपन्यास की भाषा बडे सक्षम रूप से अभिव्यक्त करती है। और उस रूप में वह काफी तेज और पैनी है। एक तीखे औजार की तरह वह काफी मार करती है और अर्थो को घावों की तरह उघाड़ती है।

'बसंत की प्रतीक्षा' उपन्यास का अनुपम मिश्र और उसकी प्रेयसी मीनाक्षी भी अपने परिवेशगत तमास संघर्षों से गुजरते हुए अपने आत्मा के उद्गम तक पहुँचकर पहल करते है। सारे जड़त्वों का भैजन कर प्रेम-प्रणय की उन्मुक्त संर्जक राहों पर निकल पड़ते है। इस प्रसंग में शृंगार उपन्यास के ये कुछ वाक्य अत्यन्त महत्वपूर्ण और मौलिक प्रज्ञा से भास्वर हैं-

'पेरीन ने एक नजर में देख लिया सारा पार्क श्रीमंत नायक हैं पार्क पुरूष है पार्क की सारी प्रकृति पेरीन हैं वह फव्वारा सौन्दर्य हैं आदि सौन्दर्य आदि सौन्दर्य। शुद्ध रोमांस एक और स्थल पर कहा गया हैः

जो भीतर है, वह बाहर कहाँ है? सारा बाहर इस भीतर की लीला हैं। उसी की आहट है। उसी की प्रतिध्वनि है। एक और वाक्यः जैसे वह उस चट्टान को काटकर उसे बेधकर उसके रहस्य-लोक के भीतर प्रवेश करना चाहती है।

और अपाने एपिक उपन्यास 'प्रेम अपवित्र नदी' का अन्त लाल इस प्रकार करते है-

दोनों आवाक् देखते रह गए। डॉ. घोष ने एक दिन पूछा था-ईश्वर या प्रकृति ने अन्त में मनुष्य को क्यों बनाया? जानवर के बाद मनुष्य? जानवर में किस तत्व की कमी थी, जो मनुष्य में पूरी हुई? भावना- इम्पेशन जो सारी संस्कृति की बुनियाद है और इस भावना का चरम तत्व क्या है चरम तत्व? और इसी प्रश्नात्मकता पर उपन्यास समाप्त हो जाता है।

नर नारी सम्बन्धों को भी लाल ने डी.एच.लारेंस, शरद्चंद या हमारे अपने जैनेन्द्र या वात्स्यायन की तरह ही नए सिरे से परिभाषित किया है। यौन और काम को उन्होंने प्रेम के

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

विरोध में नहीं खड़ा किया है। प्रेम की आत्यतिक देहाभिव्यक्ति ही उनके लेख काम या सैक्स है। वह रूढ अर्थों में बाहर से अपवित्र दिखाकर भी, अपनी असलियत में आत्मदान की शुद्ध होमाग्नि है। अन्तिम है, सारे सम्बन्धों से परे मह नर-नारी के बीच का विशुद्व प्रेम और काम-सम्बन्ध। चिरंतन नर-नारी का यह युगल, सामाज-मर्यादाओं से ओझल नेपथ्य में अपनी जगह स्वतंत्र आत्मिक तर्क से संचालित हैं। विशुद्ध नर, विशुद्ध नारी, चिरंतन पुरूष, चिरन्तन नारी का मिलना साक्षात्कार और सर्जनात्मक संयोजन ही मानो इस समस्त सृष्टि प्रकृति का एकमात्र चरम उद्देश्य और मिशन है। एक ऐसी बाना जो अपनी देह-सीमा से रमण करती है। प्रश्न, विकल्प, द्वन्द्व से परे बैहिचक नर-नारी मिथुन का साक्षात्कार लाल के सृजन की एक भव्य उपलब्धि है।

उनके ये स्वेच्छाचारी स्त्री-पुरूष व्यभिचारी या उच्छृंखल नहीं लगते, वे अत्यन्त गंभीर समर्पित और अग्नि-स्नानल से पवित्र लगते है। यह लाल के सर्जक कलाकार के उदात्व चारित्रय बोध का द्योतक है। तब यह कहना अत्युक्ति न होगी कि लाल ने हिन्दी को नर-नारी सम्बन्ध का एक नूतन मौलिक नीति-विधान प्रदान किया है। उनके पात्रों में निरन्तर नव्यमान युग के स्त्री पुरूषों की संभाव्य मूर्तियाँ ढली है।

'बया का घोंसला और सांप' उपन्यास में भाषा सरल एवं प्रवाहमयी है। स्थानीय प्रचलित शब्दों, गीतों, मुहावरों तथा लोकक्तियों को बडे ही सुन्दर ढंग से प्रयोग किया गया है। इसमें भाषा के स्थानीय प्रयोग को देखकर आंचलिकता का आभास हो सकता है। यहाँ पर कुछ स्थानीय शब्दों के उदाहरणस्वरूप, प्रस्तुत किया जा रहा है- कल्ला, हया हो, देवतन, नेसहे, गैडसा आदि शब्दों के ग्रामीण प्रयोग हुए है। कहावतों और मुहावरों का यथोचित प्रयोग इसमें हुआ है जैसे - 'चौके की रांड', पैर भारी होना', 'ऊपर से राम-राम भीतर से कसाई काम', 'नाम बड़ा दरसन थोर' आदि। लोकगीतों का स्थल-स्थल पर प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया गया है। यथा -

"कहे ही हीरो हमारी पिया बिन,
काहे की होरी हमारी।
चैतमास बन फूलन लगे, भौरा लटकि रहे डारी,
पिया बिन काहे की होरी हमारी।

लेखक का भाषा प्रयोग अद्भूत् हैं सइमें प्रायः साहित्यिक से ग्रामीण तक भाषा के प्रत्येक रूपों का उल्लेख मिलता है। शब्दों के तत्सम, तद्भव तथा विदेशी आदि प्रयोग सरलता से

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

किया गया है। शैली वर्णनात्मक है। सम्पूर्ण कथा तृतीय पुरूष में कही गई है। स्थल-स्थल पर काव्यात्मक श्ब्दावली का भी प्रयोग किया गया है, जैसे-"पूरे कछार की धरती, उसका तना हुआ सीना धानी रंग का हो गया था और उस पर हवा की फिसली हुई नहरें इस तरह लग रही थीं जैसे उस पर झुका हुआ आकाश गा रहा हो और पूरी फसल उसके संगीत से शरमा रही हो।" इस तरह भाषा शैली सम्बन्धी प्रयोग डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल की निजी विशेषता है।

डॉ. लाल के उपन्यासों के कथोपकथनों के गुणों का विवेचन किया गया है। उपन्यास में भाषा संवाद उपयुक्त है। इसलिए उसे सबसे पहले संवाद की मांग को पूरा करना होता है। ये मांगे कुछ तो विषय की होती है, कुछ चारित्रय की कुछ शिल्प कीं जहां तक विषय का सवाल है लाल के उपन्यासों के कथ्य के अनुरूप ही उनके संवाद समसामयिक जीवन के स्वर मुखर करते हैं 'हरा समन्दर गोपीचन्दर', 'अपना-अपना राक्षस' एवं 'गली अनारकली' आदि उपन्यासों की केन्द्रीय विषयवस्तु समसामयिक है।

'हरा समन्दर गोपी चन्दर' उपन्यास में विक्रमादित्य अपने संवादों में बिल्कुल आधुनिक लगता है। उसी तरह टकराते हैं जैसे 'यह चीख के प्रेषक के-आज के प्रेक्षक के कानों' को उसी तरह टकराते है जैसे 'यह चीख आज की है। अभी सुनाई पड़ रही है, अभी यहीं।

यह समसामयिक तत्व ही लक्ष्मीनारायण लाल को अपने संवादों में बौद्विक विश्लेषण का मौका देता है। उनके उपन्यासों के कथ्य देखते हुए कहा जा सकता है कि इतने महत्वपूर्ण उपन्यास हिन्दी में कम ही हैं हरा समन्दर गोपीचन्दर उपन्यास सामयिक संदर्भ उभारते हैं और उनके संवाद निश्चयतः दुधारी तलवार की तरह काम करते है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि प्रत्येक संवाद शुद्ध है जो बाण की तरह सीधे हमारे मर्म को बेधते हैं और उन उपन्यासों में समसायिक जीवन का बौद्विक विश्लेषण करने की दृष्टि से रचे ही गए है उनमें तो उपन्यास का सम्पूर्ण कथ्य संवादों के द्वारा ही होता है। 'बया का घोंसला और सांप' शृंगार, देवीना, बसंत की प्रतीक्षा, अपना-अपना राक्षस आदि इसी कोटि के उपन्यास हैं।

आन्तरिक भावना और बौद्विक दृष्टि का समन्वय संवादों को प्रभावशाली बनाते है। लाल के संवादों में बौद्विक पक्ष हावी हो जाता है। फिर भी आंतरिक भावना की पूर्ति वे हास्य-व्यंग्य, वैदग्ध्य, नाटकीयता पैनेपन, भावानुकूल, आदि प्रवृत्तियों से कर लेते है। इसके साथ ही संवादों में वे शिल्प के प्रति कुछ ज्यादा ही जागरूक होने लगते है।

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

संवाद शिल्प के स्तर वे कई प्रयोग करते हैं जो शब्द-चयन और वाक्य रचना के गठन पर निर्भर करते हैं। किन्तु इससे भी एक भिन्न स्तर पर वे संवादों को प्रतीकों तथा बिम्बों के सृष्टि के लिए प्रयुक्त करते दिखाई देते हैं।

प्रायः विसंगति को उभारने के लिए लाल संवादों को शिल्प में ढालना पसन्द करते कहीं भोड़ेपन से, कही दिखावे से, कहीं सनकीपन से, कहीं असबद्वता से वे संवादों का संस्कार कर विसंगति को उजागर करते है। जहाँ स्थिति ही विसंगत हो वहां वह संवादों के माध्यम से ही सर्जित की जाती है।

डॉ. लाल के उपन्यासों के संवाद ऐसे पात्रों की विसंगति को उभारते है जो उडे-उडे लगते है, तटस्थ किस्म के लोग, काइयां लेग जो जीवन को भोग चुके हैं ऐसे व्यक्ति कुछ सोचते है, कुछ करते है। पात्र परम्परा को तोड़ने वाले है, इसलिए वे बातचीत करने के सारे ढंग तोड़ देते है। केई भी अपनी बात को सीधे ढंग से नहीं कहता- कोई उक्ताया-सा बोलता है तो कोई अचेतन की गांठो को लिए बोलता है और कहीं केवल बोलना सिर्फ बोलने के लिए ही हे सब कुछ असंबद्व और अयाचित।

डॉ. लाल के कथोपकथनों की सर्जना में कहीं स्वाभाविक नपे-तुले छोटे कहीं सामानांतर वाक्य-विन्यास से युक्त नाटकीय एवं सम्प्रेषणीय, कहीं अनुकूल, कहीं पुनरावृत्ति वाले कथोपकथन की सृष्टि की है। कहीं कथोपकथन में त्वरा, और वाग्प्रवाह दिखाई देती है। आक्षेप, खण्डन-मण्डन आदि की स्थितियों में तीव्र प्रहार करते हुए संवाद आगे बढ़ते है। उनमें जो शिल्प प्रयोग दिखाई देता है उसका लक्ष्य होता है एक प्रच्छन्न अर्थ को उजागर करना जिसमें लाल सिद्धहस्त है।

डॉ. लाल उपन्यासों में वातावरण सृष्टि का चित्रण है। हिन्दी के अन्य प्रेमचन्दोत्तर श्रेष्ठ उपन्यासकारों, यशपाल, भगवतीरचरण वर्मा, अमृतलाल नागर आदि से भी उनकी जमीन अलग है। परन्तु अपनी साधना से लाल ने अपने रचनाकार को इतना सबल बनाया है कि उसकारूप विन्यास अन्य सभी से सर्वथा भिन्न दिखलाई पड़ता है।

भाव का परिवेश भारत का ग्रामीण समाज, उसके छप्पर, टीले, खेत, बांस, के झुरमुट और पोखर उनमें खिलने वाले पुष्प और फल इन सब पर उनकी दृष्टि अधिक रहती है। गाँव के बूढ़े, बालक, युवक, स्त्रियां सभी को वे अच्छी तरह से पहचानते है। उनकी आदतें, उनका स्वभाव, सलीका, उनका व्यवहार, उनके दोष ओर गुण सभी कुछ उनके खूब जाने बूझे है।

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

इस क्षेत्र में उनमें कोई गलती नहीं होती। बहुत समृद्ध आधुनिक वैभव का अभिजात्य समाज, उनके चित्र उनके यहाँ की तरह नहीं है जैसे बंगाल के शंकर या विमल मिश्र के पात्र। वे पूरी तरह से हिन्दी के है, उत्तरी भारत के विशेषकर उत्तरप्रदेशी मध्यमवर्ग और ग्रामीण कृषक श्रमिक समुदाय, उनके उपन्यासों के पात्र विषयवस्तु हैं। परन्तु उनकी सामाजिक चेतना आश्चर्य चकित करने वाली है। क्रांतिकारिणी है। प्रभावशाली है, और उथल-पुथल मचाने वाली है। बहुत से घोषित और तथा कथित प्रगतिशीलों से अपनी लेखनी में, अपने संदेश में वह कोसों आगे है। लाल आडम्बर से कोसों दूर हैं जैसे ग्रामीण बुजुर्ग का अनुभव जिन्दगी के कुछ सत्यों को हथेली पर स्पष्ट है, वैसे ही लेखक का बोध है। लाल अपनी लेखनी से आज की विसंगतियों और विषमताओं से जुडे समाज को चुपके से अपनी मुठ्ठी से बन्द कर देते हैं। कोई चमत्कार नहीं, कोई जादू नहीं अनुभव ने उन्हें विवेकपूर्ण दृष्टि दी है। परन्तु वह उपदेशक नहीं कथानक है। इसलिए अपने संदेश के स्वर अपने ढंग से कहने आदी है।

डॉ. लाल के उपन्यासों के उद्देश्य की अभिव्यक्ति है। डॉ. लाल के उपन्यासों में एक और उनका चिंतन प्रस्फुटित होता है तो दूसरी और उनके औपन्यासिक विकास के ग्राफ को पढ़ा जा सकता है। उपन्यासों के समग्र अनुशीलन से साफ झलकता है कि किसी भी समर्थन रचनाकार की तरह लक्ष्मीनारायण लाल की निश्चित विचार-धारा जो उनके अनुभव और अध्ययन का सहज फल हैं। वस्तु चयन के स्तर पर कुछ विषय डॉ. लाल को अत्यन्त प्रिय थे जो उनके हर उपन्यास में पिरोये मिलते हैं। विचारों के बोझ को ढ़ोते में उपन्यास जगह-जगह अपरूप तक होने दिखाई पड़ते हैं डॉ. लाल की अपनी बुनियादी सोच थी जिससे कोई पाठक अहसहमत भी हो सकता है। प्रेम कथाकार का प्रिय विषय था जिसके स्वरूप को पहचान देने के लिए वह निरन्तर प्रयत्नशील थे। शायद ही कोई उपन्यास हो जिसमें प्रेम सम्बन्धी प्रसंग न आये हों, किन्तु उसके स्वरूप को जितनी बारीकी से मन वृंदानन में तराशा गया है, उतनी मेहनत उस रूप में अन्य उपन्यासों में नहीं है। लगभग हर उपन्यास में कोई आदमी किसी स्त्री की और सहज रूप से आकर्षित होकर प्रेम की पीगे शुरू करता हैं जो कालान्तर में दोनों के सहयोग से विकसित हो स्थायी सम्बन्ध का रूप ले लेती है। 'बया का घोंसला और साँप' में यह सुभागी और आनन्द की जोड़ी है तो 'रूपाजीवा' में सूरज और सन्तोष की। शृंगार में श्रीमंत और पेरिन हैं तो बसंत की प्रतीक्षा में अनुपन मिश्रा और मीनाक्षी। गोपी चन्दर हरासमन्दर में प्रेम विक्रम और सुगन सुन्दरी के बीच पनता है तो 'गली अनानकली में अपाला और कमाल के बीच। बाकी उपन्यासों में भी है। प्रेम अपवित्र नदी और मन वृंदावन की स्थिति किंचित विशिष्ट है। प्रेम अपवित्र नदी में तीन पीढ़ियों की

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

कहानी हैं इसलिए उसमें ताने-बाने कुछ अधिक जटिल है। 'मन वृन्दावन' में यह एक त्रिकोण की शक्ल में है। जहाँ एक प्रेमी दो प्रेमिकाओं के बीच संरचरण करता हैं। श्रृंगार में जहां प्रेम प्रकृति और पुरूष की शक्ल इख्तियार कर स्वैच्छाचारी हो गया हैं वहां 'मन वृन्दावन में यह चिंतन सूक्ष्म धरातल पर प्रतिष्ठित है।

जिस दूसरे विषय को उपन्यासों में महत्त्व मिला हैं वह नारी की मुक्ति है। वैसे तो रचनाओं में प्राणीमात्र की मुक्ति का संदेश हैं तद्यापि कथाकार नारी की अस्मिता को विशेषकर पूरा मान-सम्मान देता है। मोटे अर्थ में, डॉ. लाल भांति के दबावों के नीचे कसमसाती दिखाती है। ये दबाव रूढ़ियों के रूप में हैं। चाहे वे आर्थिक हो या सामाजिक या धार्मिक अथवा पारिवारिक। इसमें पुरूष के अहं जनित अत्याचार भी जोड़े जा सकते हैं। स्त्रियों की मुक्ति में ये सभी तत्व बाधक बनते है।